ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

आधी आबादी की भारतीय लोकतंत्र में स्थिति एवं योगदान

Neha Sharma

MA, (SPC Govt. College, Ajmer), UGC, NET, Khandela, Sikar, Rajasthan, India

सार

भारत दुनिया का पहला (जनसंख्या में) और सातवाँ (क्षेत्र में) सबसे बड़ा देश है। भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, फिर भी यह एक युवा राष्ट्र है। १९४७ की स्वतन्त्रता के बाद दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को इसके राष्ट्रवादी के आंदोलन कांग्रेस के नेतृत्व के तहत बनाया गया था।

लोकसभा के सदस्यों का चुनाव हर ५ वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। वर्तमान में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी मंत्रिपरिषद के मुखिया हैं, जबकि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू राष्ट्र के मुखिया हैं।

देश में दो मुख्य गठबंधन:राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन और सत्ताधारी पार्टियाँ १६ ; छह मुख्य राष्ट्रीय पार्टियाँ हैं: भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), बहुजन समाज पार्टी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी. राज्य स्तर पर, कई क्षेत्रीय दल विधानसभाओं के लिय हर पांच साल पर खड़े होते हैं। राज्य सभा चुनाव हर ६ वर्ष में आयोजित की जाती है।

लोकतंत्र, सरकार की एक प्रणाली है जो नागरिकों को वोट देने और मतदाताओं को अपनी पसंद की विधायिका का चुनाव करने की अनुमति देती है। इसके तीन मुख्य अंग हैं: कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका।

भारत में अभी भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी है।

परिचय

विश्व की जनसंख्या का छठा हिस्सा भारत के साथ विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है । आधिकारिक अनुमान के मुताबिक 2022 में भारत की जनसंख्या 1.42 अरब से अधिक होगी। [5]

1975 और 2010 के बीच, जनसंख्या दोगुनी होकर 1.2 अरब हो गई, जो 2000 में एक अरब के आंकड़े तक पहुंच गई। अप्रैल 2023 के अंत में भारत चीन को पीछे छोड़कर सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया। [6] बुधवार को जारी संयुक्त राष्ट्र के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत चीन को पछाड़कर दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया। समाचार एजेंसी ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के अनुसार, भारत की जनसंख्या अब 1.428 बिलियन से कुछ अधिक है, जो चीन की 1.425 बिलियन लोगों की आबादी को पीछे छोड़ देती है। [7] इसकी जनसंख्या 2050 तक 1.7 अरब तक पहुंचने के लिए तैयार है। [8] [9] 2017 में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 0.98% थी, जो 112वें स्थान पर थी।इस दुनिया में; इसके विपरीत, 1972 से 1983 तक, भारत की जनसंख्या 2.3% की वार्षिक दर से बढ़ी। [10]

2022 में, एक भारतीय की औसत आयु 28.7 वर्ष थी, [11] जबकि चीन के लिए यह 38.4 और जापान के लिए 48.6 थी; और, 2030 तक; भारत का निर्भरता अनुपात 0.4 से थोड़ा अधिक होगा। [12] हालाँकि, भारत में बच्चों की संख्या एक दशक पहले चरम पर थी और अब गिर रही है। पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की संख्या 2007 में चरम पर थी और तब से यह संख्या गिर रही है। 15 वर्ष से कम उम्र के भारतीयों की संख्या थोड़ी देर बाद (2011 में) चरम पर पहुंच गई और अब इसमें गिरावट भी आ रही है। [13]

भारत में दो हजार से अधिक जातीय समूह हैं, [14] और हर प्रमुख धर्म का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जैसे भाषाओं के चार प्रमुख परिवार (इंडो-यूरोपीय , द्रविड़ , ऑस्ट्रोएशियाटिक और चीन-तिब्बती भाषाएं) और साथ ही दो अलग-अलग भाषाएं : निहाली भाषा , [15] महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में बोली जाती है , और बुरुशास्की भाषा, जम्मू और कश्मीर के कुछ हिस्सों में

बोली जाती है । भारत में 1,000,000 लोग एंग्लो-इंडियन और 700,000 संयुक्त राज्य अमेरिका के हैंनागरिक भारत में रह रहे हैं. [16] वे भारत की कुल जनसंख्या का 0.1% से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल मिलाकर, केवल अफ्रीका महाद्वीप ही भारत देश की भाषाई, आनुवंशिक और सांस्कृतिक विविधता से आगे है। [17]

2016 में लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 944 महिलाएं था, और 2011 में प्रति 1000 पुरुषों पर 940 था। [18] पिछली शताब्दी में लगातार गिरावट के बाद पिछले दो दशकों से यह अनुपात ऊपर की ओर रुझान दिखा रहा है। [19]

हालांकि फिर भी भारत दुनिया में सबसे ज़्यादा आबादी वाला देश बना रहेगा. और यही नहीं दुनिया की आबादी भी सदी के आखिर में जितना पहले अनुमान लगाया गया था उससे दो अरब कम रहेगी.ये अनुमान प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल लैंसेट में छपी एक ताज़ा रिपोर्ट में लगाया गया है.रिपोर्ट कहती है कि अभी दुनिया की आबादी करीब 7.8 अरब है जो कि साल 2100 में करीब 8.8 अरब हो जाएगी. लेकिन संयुक्त राष्ट्र ने 2019 में जो रिपोर्ट प्रकाशित की थी, उसमें साल 2100 तक दुनिया की आबादी करीब 10.9 अरब होने का अनुमान लगाया गया था.
भारत के बारे में रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में साल 2047 के बाद से कमी आएगी. साल 2047 तक भारत की जनसंख्या बढ़कर अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाएगी और उस वक़्त देश की जनसंख्या करीब 1.61 अरब होगी.
भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 2010 से लेकर 2019 तक औसतन 1.2 फ़ीसद बताया गया है और कहा गया है कि इस रफ़्तार से भारत चीन को 2027 तक पीछे छोड़कर दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा.
वहीं दुनिया की आबादी साल 2064 में अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचेगी. इस साल तक पूरी दुनिया की कुल आबादी करीब 9.73 अरब होगी.[1,2]
संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में जो अनुमान लगाया गया था, उसकी तुलना में लैंसेट की रिपोर्ट के मुताबिक़ दुनिया की आबादी के 36 साल पहले ही अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचने की संभावना है.
लैंसेट ने अपनी मौजूदा रिपोर्ट में कहा है कि संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में गिरते प्रजनन दर और बुज़ुर्गों की आबादी को तो ध्यान में रखा था लेकिन कुछ दूसरे मापदंडों को नज़रअंदाज़ किया था.
इन दोनों ही रिपोर्ट में आए इस फर्क को लेकर **पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया की एग्ज़ेक्यूटिव डायेरक्टर पूनम मुतरेज़ा** का कहना है कि ऐसा प्रजनन दर में आई गिरावट के आकलन के कारण हुआ. साथ ही संयुक्त राष्ट्र ने जो डेटा लिया था, वो पिछले दस सालों की जनगणना के आधार पर था जो कि 2.1 फ़ीसद था जबकि इस जनगणना में वो घटकर सिर्फ 1.8 रह गया है. लैंसेट में छपे अध्ययन में बिल्कुल हालिया रुझान को शामिल किया गया है.
पूनम मुतरेज़ाने बीबीसी से कहा, "संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट और लैंसेट की ताज़ा रिपोर्ट, ये दोनों ही अनुमानों पर आधारित है और ये अनुमान मौजूदा प्रजनन दर के आधार पर लगाए गए है. भारत के अधिकांश हिस्सों में प्रजनन दर में तेज़ी से गिरावट आ रही है. यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश राजस्थान और ओडिशा को छोड़ दे तो बाकी राज्यों में प्रजनन दर नेगेटिव में जाने वाले हैं. तो हुआ ये है कि प्रजनन दर जितना अनुमान लगाया गया था, उससे कहीं ज़्यादा तेज़ी से उसमें गिरावट आ रही है."
वो बताती हैं कि प्रजनन दर घटने के कई कारण हैं.
उन्होंने कहा," शादी करने की उम्र में बढ़ोत्तरी हुई है, लोग अब दो बच्चों की बीच अंतराल रख रहे हैं. लोगों में परिवार नियोजन को लेकर ही नहीं सिर्फ जागरूकता आई है बल्कि ज्यादा बच्चों की वजह से होने वाले आर्थिक परेशानियों को लेकर भी जागरूकता आई है. खास तौर पर ग़रीब लोगों में ये जागरूकता आ रही है. वो बच्चों को पढ़ाना-लिखाना चाहते हैं. इस पर भी काफ़ी खर्च आ रहा है. ये तमाम वजह हैं जिसकी वजह से प्रजनन दर में गिरावट आ रही है.[3,4]

विचार-विमर्श

भारत की 84 प्रतिशत आबादी केवल 44 प्रतिशत उत्पाद खरीद पाती है। इसका सार यह है कि यह 84 प्रतिशत आबादी अपनी रकम मूल रूप से बुनियादी जरूरतों पर ही खर्च करती है, न कि उन उत्पादों पर जो जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने वाले होते हैं। यह गरीबी और विषमता की उतनी ही सटीक तस्वीर दिखाता है, जितनी कि आंकड़े आपको दिखाएंगे। हमारी राष्ट्रीय संपदा का पलड़ा पूरी तरह देश की 20 प्रतिशत आबादी के पक्ष में झुका हुआ है। यह वही आबादी है जो पहली या दूसरी दुनिया में रहती है। शेष आबादी चौथी दुनिया में रहने को अभिशप्त है। आधुनिक मशीनों के फायदे उन तक नहीं पहुंच पाए हैं। स्वतंत्रता के सात से अधिक दशकों के बाद हमारे देश की यही कड़वी हकीकत है। हमने 1947 में राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल की और उसे पूरे आत्मविश्वास के साथ संरक्षित भी किया। इसके बावजूद किसी भी प्रकार की आर्थिक समानता हासिल करने में हमें अभी कई

दशक और लग जाएंगे। इसमें यह समकालीन तथ्य भी जोड़ लिया जाए कि कोविड महामारी के कारण हुई हालिया आर्थिक उथल-पुथल ने लाखों लोगों के रोजगार पर ग्रहण लगा दिया है। इससे हाल-फिलहाल का परिदृश्य बहुत बदरंग दिख रहा है।

लोकतंत्र में आर्थिक बदहाली का सीधा संबंध हमेशा राजनीतिक भविष्य से जुड़ा होता है। प्रत्येक चुनाव का गणित अलग होता है। यहां तक आप जिन कारणों के दम पर दोबारा चुनाव जीतकर आते हैं, वे भी पहले चुनाव के मुकाबले बदल जाते हैं। सीधे शब्दों में समझाया जाए तो चुनाव आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है, जबकि पुन: चुनाव जीतकर आना सरकार के प्रदर्शन पर एक प्रकार की मुहर। इससे जुड़ा विश्लेषण भी उसी के इर्दगिर्द होता है। चुनावी जीत का अंतर निर्धारित करने वाले निर्वाचन अखाड़ों यानी निर्वाचकों की जमीन हमेशा बदलती रही है। यह कलाइडोस्कोप की तरह है। थोड़ी सी हलचल के साथ ही रुझान बदल जाता है। मतदाता समूहों को जाति और धर्म के पुराने चश्मे से देखने का हमारे राजनीतिक वर्ग का पारंपरिक नजरिया उनकी सबसे बड़ी असफलता है। नि:संदेह इन पहलुओं में सामाजिक तथ्य समाहित होते हैं, लेकिन वे पूरी सच्चाई बयान नहीं करते। उन पर गहन मंथन आवश्यक है।[5,6]

लोकतंत्र की गतिशीलता इसी में निहित होती है कि गैर-विशिष्ट पहचान वाले मतदाताओं की स्थिति में पिछले चुनाव के मुकाबले वर्तमान में कितना बदलाव आया है। उत्तर प्रदेश के चुनावों में जातिगत समीकरणों की महत्ता जगजाहिर है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने माकूल समीकरणों को बैठाने की जुगत भिड़ाने में लगे भी रहते हैं। इस बीच कम से कम दो नए निर्वाचक सामने उभरे हैं। ये आर्थिक धारणाओं से प्रेरित होते हैं और इस कारण पारंपरिक पैमानों को तोड़ते हैं। चूंकि इनमें से एक वर्ग खेतिहर किसानों का है तो इसका गहराई की तुलना में जनसांख्यिकीय विस्तार से अधिक वास्ता है। ग्रामीण विमर्श को प्रभावित करने में वे माहिर हैं। यहां तक कि उन समुदायों में भी उनकी गहरी पैठ है, जो भले ही उनके आर्थिक हितों को साझा न करते हों। ऐसे कई साक्ष्य मिल रहे हैं कि कृषि कानून विरोधी मुहिम ने कई अन्य कारकों के साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक चुनावी मुद्दा तो बना दिया है, लेकिन अभी इसकी पुष्टि के लिए कोई सटीक डाटा उपलब्ध नहीं। अगर है भी तो कम से कम वह मेरी जानकारी में नहीं है। हालांकि, मतदाताओं के मन की थाह लेने वाले जरूर उत्तर प्रदेश विधानसभा के पिछले और आगामी विधानसभा चुनावों के बीच परिदृश्य में कुछ परिवर्तन की आहट को महसूस कर रहे हैं।

विशिष्ट पहचान से इतर एक वर्ग के रूप में कोविड से प्रभावित लोग हैं। इसमें विस्तार और गहराई दोनों है, क्योंकि कोई भी महामारी वर्ग, धर्म और जाति के बंधनों से मुक्त होती है। जैसा कि किसी भी आपदा में होता है कि ग्रामीण गरीब उससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, क्योंकि सामान्य स्वास्थ्य सुविधाएं उनकी पहुंच से बहुत दूर होती हैं। वे गुमनाम मौत के शिकार होते हैं। यहां तक कि उनकी अंतिम क्रिया के लिए भी संसाधन नहीं मिलते। दुख की स्मृतियां दिल पर लगे दाग के रूप में अंकित हो जाती हैं। ये दाग भले ही हमेशा नमूदार न हों, लेकिन उन्हें मिटाना भी आसान नहीं होता। वे बहुत ही गहरे होते हैं।

भारतीय मतदाता नासमझ नहीं हैं। वे किसी बेलगाम महामारी के लिए सरकार को दोष नहीं देते। कोविड के कहर के बावजूद बंगाल, केरल और असम की सरकारें दोबारा चुनाव जीतकर सत्ता में आ गईं। वे संकट के समय स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर सरकारी हस्तक्षेप की गुणवत्ता और आर्थिक परिणामों के आधार पर शासन के स्तर यानी गवर्नेस को आंकते हैं। अगर उन्हें महसूस होता है कि सरकारों ने हरसंभव बेहतरीन प्रयास कर अपना सर्वश्रेष्ठ दिया तो वे सकारात्मकता दिखाएंगे। इसके विपरीत यदि उन्हें यह लगे कि सरकारी रवैया पक्षपातपूर्ण और अक्षम रहा तो वे अपना आक्रोश भी जताएंगे। महामारी ने लोगों की जान से ज्यादा उनकी आजीविका पर प्रहार किया और यह चोट भी उन लोगों पर अधिक गहरी हुई, जो पहले ही आर्थिक रूप से कमजोर या नाजुक थे।

भारतीय मतदाताओं ने अपने आक्रोश को मतदान के दिन तक सहेजकर रखना सीख लिया है, क्योंकि वे अभी भी लोकतंत्र की साख को लेकर बहुत आश्वस्त हैं। हमारे लोकतंत्र की सबसे उल्लेखनीय सच्चाई यही है कि चाहे सरकारी खेमा हो या विपक्षी दल, वे चुनावी परिणाम को लेकर कभी पूरी तरह आश्वस्त होने का जोखिम नहीं ले सकते और वास्तव में यही होना भी चाहिए। यहां केवल इसी बात की निश्चिंतता है, जिसमें यह थाह ली जा सके कि सियासी जमीन खिसक रही है और समीकरण बदल रहे हैं। ऐसे में वास्तविकता को स्वीकार करने वाले ही बदलाव की सही दिशा को भांप सकते हैं।[7,8]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

परिणाम

"भारत में लोकतंत्र भारतीय धरती पर केवल दिखावा मात्र है, जो मूलतः अलोकतांत्रिक है..." ~ बीआर अम्बेडकर

देबाशीष रॉय चौधरी और जॉन कीन की पुस्तक, टू किल ए डेमोक्रेसी: इंडियाज पैसेज टू डेस्पोटिज्म , के शीर्षक से पता चलता है कि भारत एक लोकतंत्र था जिसे नरेंद्र मोदी के तहत मार दिया गया है और निरंकुशता में बदल दिया गया है। काफी नहीं; इसके बजाय यह तर्क दिया जाता है कि पतन की वर्तमान स्थिति, हालांकि प्लूटार्की की धीमी गति वाली बयानबाजी उदारवाद में एक गड़बड़ी का प्रतिनिधित्व करती है, पूरी तरह से हिंदुत्व व्यवस्था द्वारा नहीं लाई गई है। इसके बीज आजादी के समय ही बो दिये गये थे।

2014 के बाद से मोदी शासन ने निश्चित रूप से हिंदू राष्ट्र के अपने लंबे समय से पोषित सपने को पूरा करने की चिंता के कारण निरंकुशता की ओर अपने पतन को तेज कर दिया है।एक संकुचित समय सीमा में. पुस्तक द्वारा प्रतिपादित असुविधाजनक सत्य हमें बार-बार प्रभावित कर रहा है - कि किसी को भी इस व्यवस्था द्वारा दुष्कर्म का एक भी कार्य नहीं मिलेगा, जिसकी किसी न किसी रूप में कांग्रेस शासन में कोई प्राथमिकता नहीं थी। निस्संदेह, मोदी के पंथ को घोषित रूप से अलोकतांत्रिक घोषित कर दिया गया है। उनके वैचारिक माता-पिता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपने फासीवादी इतिहास के लिए इतना प्रसिद्ध है कि उनसे लोकतांत्रिक होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। वह जानता है, हाल के दिनों में दुनिया के सभी तानाशाहों और तानाशाहों ने लोकतंत्र की हत्या करने से पहले लोकतांत्रिक तरीकों (चुनाव) के माध्यम से सत्ता हासिल की है। वह उनके नक्शेकदम पर असंदिग्ध रूप से आगे बढ़ रहे हैं।

औपनिवेशिक भारतीय राज्य की नींव ही धुंधली रही है। इसकी सबसे कीमती रचना जिसने इसकी लोकतांत्रिक साख स्थापित की, संविधान की प्रस्तावना ने घोषणा की कि विभाजन के बाद नवजात भारत एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य होगा, जो अपने सभी नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व प्रदान करेगा। हालाँकि, जिस संविधान सभा ने इसे जन्म दिया, उसने बमुश्किल एक-चौथाई लोगों, संपत्ति और शिक्षा वाले लोगों, यहां तक कि विस्तारित मताधिकार में भी, का प्रतिनिधित्व किया था। और इसलिए 'हम भारत के लोग' का अर्थ एक अमूर्त, एक राजनीतिक कल्पना, वास्तविक लोगों से अलग होना और समय के साथ उनके विपरीत विकसित होना तय था।[9,10]

मानो इसे बिल्कुल अर्थहीन बनाने के लिए, 1975 के आपातकाल के दौरान, 42वें संशोधन ने प्रस्तावना में दो शब्द - धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी - को विरोधाभासी रूप से जोड़ा, जिसने संविधान द्वारा निर्मित निरंकुशता का पहला स्वाद दिया। इस प्रकार यह प्रस्तावना किसी और का नहीं बल्कि संस्थापकों का पहला जुमला साबित हुआ , जो भारतीय लोकतंत्र के बारे में अग्रणी असत्य था। अमृतकाल में प्रवेश करते ही यह असत्य बढ़ता ही जाएगा और वास्तविकता पर पूरी तरह हावी हो जाएगा , मोदी शब्दकोष में हाल ही में जोड़ा गया यह शब्द अर्थों के उलटफेर का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है जिसे लोग चुपचाप सहते हैं। समीक्षाधीन पुस्तक आज निरंकुश भारत में लोकतंत्र की स्थिति का चित्रण करती है , जब उन्हें 'लोकतंत्र की जननी' के रूप में पेश किया जाता है।

लेखकों का तर्क है कि लोकतंत्र, "राजनीतिक दलों, चुनावों, विधायिकाओं, सरकारों, [और] प्रधानमंत्रियों पर केंद्रित उच्च-स्तरीय गतिशीलता से कहीं अधिक है"। ऐसा देश जहां आप भारी नकदी और निजी सेना, मीडिया और अन्य संस्थानों पर नियंत्रण के साथ चुनाव जीत सकते हैं, लोकतंत्र से बहुत दूर है।

सत्तारूढ़ भाजपा आज विपक्षी दलों से कहीं अधिक अमीर है। ऐसा कहा जाता है कि यह दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे अमीर पार्टी है जिसे दुर्जेय नेतृत्व वाले नागरिक समाज संगठन का समर्थन प्राप्त है जिसने अपनी फासीवादी प्रवृत्तियों को कभी नहीं छिपाया। आज, इसका मीडिया और राज्य संस्थानों पर पूर्ण नियंत्रण है, जिसका सरकार के किसी भी विरोध को कुचलने के लिए व्यापक रूप से दुरुपयोग किया जा रहा है, चाहे वह विपक्षी दलों या नागरिक समाज के बुद्धिजीवियों और मानवाधिकार रक्षकों का हो, जिनमें से कई पहले से ही कठोर कानूनों के तहत जेल में बंद हैं। इसने संसद को महत्वहीन बना

दिया है क्योंकि कानून अक्सर बिना बहस के पारित हो जाते हैं। जजों पर ट्रोल्स का दबाव होता है (क्योंकि लीगल राइट्स ऑब्जर्वेटरी, एक आरएसएस-संबद्ध संगठन ने अभियान चलाया था और सीजेआई से शिकायत की थी)जुलाई 2021 में जज एसएस शिंदे के खिलाफ आतंक के आरोपी जेसुइट पुजारी और अधिकार कार्यकर्ता स्टेन स्वामी के पक्ष में पक्षपात करने के आरोप में) या अगर वे प्रभावित होने से इनकार करते हैं तो उन्हें बिल्कुल भी नियुक्त नहीं किया जाएगा, जिसका मतलब है कि एक बार स्वतंत्र न्यायपालिका अब ज्यादातर सरकार के पक्ष में शासन करती है . विश्वविद्यालय भी अपनी स्वतंत्रता खो रहे हैं, क्योंकि सरकार अपने लोगों को उनका प्रभारी बना रही है। विरोधियों को दंडित करने के लिए सख्त वित्तपोषण कानूनों को हथियार बनाया गया है, जिससे पिछले सात वर्षों में भारत के दो-तिहाई 'असुविधाजनक' एनजीओ गायब हो गए हैं। पिछले आठ वर्षों के दौरान ऐसे संविधान विरोधी उदाहरण हर जगह हैं।[11,12]

कुछ हद तक डॉ. अंबेडकर की बात को दोहराते हुए, लेखक लोकतंत्र को गरिमा के साथ जीने की संपूर्ण जीवन पद्धति के रूप में परिभाषित करते हैं, और इसीलिए वे भारतीय लोकतंत्र की गिरती सामाजिक नींव पर विशेष ध्यान देते हैं। वे जीवित रहने के लिए लोगों के दैनिक संघर्षों का वर्णन करते हैं और बताते हैं कि किस प्रकार बड़ी संख्या में लोगों द्वारा झेले गए सामाजिक अन्याय और अस्वतंत्रता ने भारतीय चुनावों को उनके अर्थ से वंचित कर दिया है। अभी भी चुनावों में भाग लेने वाले लोगों की दिलचस्प विशेषता राज्य के आदेशों के प्रति उनकी आज्ञाकारिता, चुनाव बन चुके सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति प्रेम और राजनीतिक दलों द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभन के कारण हो सकती है।

यह पुस्तक उन तमाम मुद्दों पर आँकड़ों से भरी हुई है जो लोगों के जीवन को गरिमापूर्ण बनाते हैं। वे हैं: स्वास्थ्य सेवा, भूख, पर्यावरणीय खतरे, घातक यातायात, निराशाजनक सार्वजनिक शिक्षा, न्याय प्रणाली की शिथिलता, चुनावी दबाव, "राष्ट्रवादी" आख्यानों को बढ़ावा देने में मीडिया की मिलीभगत, जातिवाद की दृढ़ता, पत्रकारों और शिक्षाविदों का उत्पीड़न और कारावास। "राष्ट्र-विरोधी" गतिविधियाँ, यौन और लिंग-आधारित हिंसा, और संविधान में हाल के बदलाव, जिसने, वर्तमान हिंदू राष्ट्रवादी सरकार के तहत, बड़े पैमाने पर मुस्लिम अल्पसंख्यक को व्यवस्थित रूप से लक्षित किया है।

सरकार के प्रचार के विपरीत लोगों की स्थिति से जुड़ी वैश्विक रैंकिंग में भारत तेजी से नीचे की ओर बढ़ रहा है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 में देश 121 देशों में से 107वें स्थान पर है, जिसमें बच्चों में वेस्टिंग दर 19.3% है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है। एशिया में अफगानिस्तान 109वीं रैंक के साथ भारत से पीछे एकमात्र देश है। पड़ोसी देशों - पाकिस्तान (99), बांग्लादेश (84), नेपाल (81) और श्रीलंका (64) - सभी का प्रदर्शन भारत से बेहतर रहा है। 2021 में, भारत 116 देशों में से 101वें स्थान पर था, जबकि 2020 में देश 107 देशों में 94वें स्थान पर था, जो कांगो और इराक से भी बदतर था।

भारत एक वर्ष में अपनी आबादी को खिलाने के लिए आवश्यक 225 मिलियन टन से कहीं अधिक भोजन का उत्पादन करता है, लेकिन इसका 40% बर्बाद हो जाता है, क्योंकि अक्सर भंडारण या परिवहन की कोई क्षमता नहीं होती है। ग्लोबल स्लेवरी इंडेक्स का अनुमान है कि इस समय आठ मिलियन भारतीय "आधुनिक गुलामी" में जी रहे हैं। मोदी के शासनकाल में असमानता तेजी से बढ़ी है। हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा गौतम अडानी की संपत्ति का वर्तमान खुलासा केवल शासन प्रणाली में सड़न को दर्शाता है। इससे पहले ऑक्सफैम की रिपोर्ट में खुलासा हुआ था कि महामारी के दौरान अडानी की संपत्ति आठ गुना बढ़ गई हैऔर उन्होंने देश के सबसे बड़े बंदरगाह ऑपरेटर और इसके सबसे बड़े थर्मल कोयला बिजली उत्पादक बनने के लिए राज्य कनेक्शन का उपयोग किया, बिजली पारेषण, गैस वितरण और अब निजीकृत हवाई अड्डों पर बाजार नियंत्रण हासिल किया - सभी को एक बार सार्वजनिक सामान माना जाता था।[13]

भारत की लोकतांत्रिक अस्वस्थता अब सर्वविदित है: गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय (स्वीडन) में वी-डेम इंस्टीट्यूट, जो लोकतंत्रों के स्वास्थ्य पर डेटा को ट्रैक करता है, ने अपनी 2022 की रिपोर्ट में भारत को "चुनावी निरंकुशता" के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया है । इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट (ईआईयू) ने उसे " त्रुटिपूर्ण लोकतंत्र " की श्रेणी में रखा और इसकी रैंक 2014 में 27 से तेजी से गिरकर 2020 में 53 हो गई, हालांकि 2021 में इसमें थोड़ा सुधार हुआ और यह 46 हो गई। अपनी फ्रीडम इन द वर्ल्ड 2021 रिपोर्ट में, फ्रीडम सदन ने भारत का दर्जा घटाकर 'स्वतंत्र' से 'आंशिक रूप से मुक्त' कर दिया. इसमें कहा गया है कि 2014 से पत्रकारों की बढ़ती धमकी, मानवाधिकार संगठनों पर बढ़ते दबाव और मुसलमानों पर बढ़ते हमलों के कारण देश में नागरिक स्वतंत्रता में गिरावट आ रही है। इसकी 2022 की रिपोर्ट में भी भारत के "आंशिक रूप से स्वतंत्र" होने की पुष्टि की गई है। भारत के लोकतांत्रिक घाटे पर विद्वानों और विश्लेषकों की गुणात्मक टिप्पणियाँ प्रचुर हैं।

पुस्तक इस सवाल से निपटती है कि लोकतंत्र कैसे मारे जाते हैं और राष्ट्रीय संस्थानों के भीतर संस्थागत टूटने के माध्यम से "ब्रेकडाउन" (हिंसक विद्रोह) या धीमी मृत्यु सिंड्रोम के सामान्य परिप्रेक्ष्य को खारिज कर देते हैं। यह अपना स्वयं का परिप्रेक्ष्य प्रदान नहीं करता है. भारत में, लोकतंत्र की हत्या कैसे की जाती है, यह सवाल अपने आप में असंगत लगता है, क्योंकि संविधान और संस्थानों की अलंकारिक आड़ से परे, लोकतंत्र ने कभी जड़ें नहीं जमाई थीं। जन-समर्थक बातों के बावजूद, उत्तर-औपनिवेशिक भारतीय राज्य पूरी तरह से औपनिवेशिक राज्य तंत्र के साथ जारी रहा, जिसमें संविधान का एक बड़ा हिस्सा भी शामिल था, जिसे जनता के शोषण के लिए डिजाइन और परिपूर्ण किया गया था। यहां तक कि विपक्षी दल के अस्तित्व जैसी संसदीय लोकतंत्र की बुनियादी बातों को भी मुश्किल से पूरा किया जाता है। उदाहरण के लिए, शायद कम्युनिस्ट पार्टियों को छोड़कर, कोई सच्ची विपक्षी पार्टी नहीं रही है। मोदी के अधिनायकवादी शासन ने भारत में लोकतांत्रिक राजनीति की इस बुनियादी कमी को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया।

पुस्तक एक आशावादी नोट पर समाप्त होती है, मानो लोकतंत्र के विनाश के अपने अंधेरे वर्णन को संतुलित करने के लिए। यह इस तथ्य में अपनी आशा रखता है कि भाजपा की चुनावी मशीन की स्पष्ट अजेयता के बावजूद, इसका वोट शेयर लोकप्रिय वोट के एक तिहाई से अधिक नहीं हुआ है। इसका मतलब यह है कि लगभग दो-तिहाई आबादी (मतदाता) या तो भाजपा के विरोध में है या उसके साथ नहीं है। प्रचलित फर्स्ट-पास्ट-द-पोस्ट (एफपीटीपी) प्रकार के चुनावों में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसके पास कितने वोट हैं; मायने यह रखता है कि सबसे ज्यादा वोट किसे मिले। यह प्रणाली लोकप्रियता को नहीं बल्कि रणनीति को पुरस्कृत करती है: यदि रणनीति अच्छी तरह से तैयार की गई है, तो एफपीटीपी चुनाव जीतने के लिए वास्तव में किसी न्यूनतम राशि की आवश्यकता नहीं है; विपक्षी वोटों को विभाजित करके उन पर जीत हासिल की जा सकती है।[15,17]

निष्कर्ष

लेखकों को भाजपा की उस भव्य रणनीति का एहसास नहीं है जिसने केंद्र में उसके विरोध को प्रभावी ढंग से बेअसर कर दिया है। कांग्रेस न केवल मोदी के सत्ता पर काबिज होने के लिए बल्कि उन्हें वहां बनाए रखने के लिए भी काफी हद तक जिम्मेदार रही है। इसने मोदी द्वारा पेश की गई चुनौती का सामना करने में खुद को अक्षम साबित कर दिया है। इसके नेता ने हाल ही में भारत जोड़ो यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा करने और इस प्रकार भाजपा विरोधी खेमे के एक वर्ग को उत्साहित करने की उपलब्धि के बावजूद, अपने हताश हिंदू समर्थक मुहावरे को भी नहीं छोड़ा है: इस देश को 'हिंदुस्तान' कहना जबकि भाजपा में कोई भी ऐसा नहीं करता है .

दूसरे, लेखक कई राज्यों में गैर-भाजपा ताकतवरों के नेतृत्व में आशा देखते हैं, हालांकि वे अपने आप में निरंकुश भी हैं। केंद्र में अपनी शक्ति मजबूत करने और राज्यों को नगर पालिकाओं के स्तर तक सीमित करने के बाद, जो पूरी तरह से केंद्र के संसाधनों पर निर्भर हैं, मोदी अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए राज्यों पर जीत हासिल करने की स्थिति में होंगे, भले ही वहां कोई भी पार्टी सत्ता में हो। . उन्हें ध्यान देना चाहिए था कि भाजपा की किसी भी तथाकथित विपक्षी पार्टी की नीति का कोई जवाब नहीं है। पिछले आठ वर्षों से मोदी का रथ सभी विपक्षी दलों पर भारी पड़ रहा है और वे मूकदर्शक बने हुए हैं, उनमें से कुछ विपक्षी मुखौटे पहनकर चोरी-छिपे अपना काम कर रहे हैं।[18,19]

बहरहाल, यह पुस्तक 1947 में अपनी स्थापना से लेकर आज निरंकुशता की ओर बढ़ते भारत की बढ़ती लोकतांत्रिक कमी को समझने में एक मूल्यवान योगदान है।[20]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. National Informatics Centre 2005.
2. ↑ Wolpert 2003, पृ° 1.
3. ↑ "National Symbols | National Portal of India" [राष्ट्रीय चिह्न | भारत का राष्ट्रीय प्रवेशद्वार] (अंग्रेजी में). इंडिया पोर्टल. मूल से 6 जुलाई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १३ मई २०१४.
4. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र 2005.

5. ↑ "Profile | National Portal of India". इंडिया पोर्टल. मूल से 9 फरवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १३ मई २०१४.
6. ↑ "Constitutional Provisions – Official Language Related Part-17 Of The Constitution Of India". राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (Hindi में). मूल से 1 February 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 December 2015.
7. ↑ "Report of the Commissioner for linguistic minorities: 50th report (July 2012 to June 2013)" (PDF). Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. मूल (PDF) से 8 July 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 December 2014.
8. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 22 दिसंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 दिसंबर 2015.
9. ↑ "C −1 Population by religious community – 2011". Office of the Registrar General & Census Commissioner. मूल से 25 August 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 August 2015.
10. ↑ Library of Congress 2004.
11. ↑ "World Population Prospects: The 2017 Revision". ESA.UN.org (custom data acquired via website). United Nations Department of Economic and Social Affairs, Population Division. अभिगमन तिथि 10 सितम्बर 2017.
12. ↑ "Population Enumeration Data (Final Population)". 2011 Census Data. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. मूल से 22 May 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 June 2016.
13. ↑ "A – 2 Decadal Variation in Population Since 1901" (PDF). 2011 Census Data. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. मूल (PDF) से 30 April 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 June 2016.
14. ↑ "World Economic Outlook Database: April 2022". Imf. International Monetary Fund. April 2022. अभिगमन तिथि 19 April 2022.
15. ↑ "Gini Index coefficient". The World Factbook. Central Intelligence Agency. मूल से 7 July 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 July 2021.
16. ↑ "Gini index (World Bank estimate) – India". World bank.
17. ↑ "Human Development Report 2020" (PDF). United Nations Development Programme. 15 December 2020. अभिगमन तिथि 15 December 2020.
18. ↑ "List of all left- & right-driving countries around the world". worldstandards.eu. 13 May 2020. अभिगमन तिथि 10 June 2020.
19. ↑ (a) Dyson, Tim (2018), A Population History of India: From the First Modern People to the Present Day, Oxford University Press, पृ॰ 1, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-882905-8; (b) Michael D. Petraglia; Bridget Allchin (22 May 2007). The Evolution and History of Human Populations in South Asia: Inter-disciplinary Studies in Archaeology, Biological Anthropology, Linguistics and Genetics. Springer Science + Business Media. पृ॰ 6. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-4020-5562-1.; (c) Fisher, Michael H. (2018), An Environmental History of India: From Earliest Times to the Twenty-First Century, Cambridge University Press, पृ॰ 23, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-107-11162-2
20. ↑ (a) Dyson, Tim (2018), A Population History of India: From the First Modern People to the Present Day, Oxford University Press, पपृ॰ 4–5, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-882905-8; (b) Fisher, Michael H. (2018), An Environmental History of India: From Earliest Times to the Twenty-First Century, Cambridge University Press, पृ॰ 33, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-107-11162-2

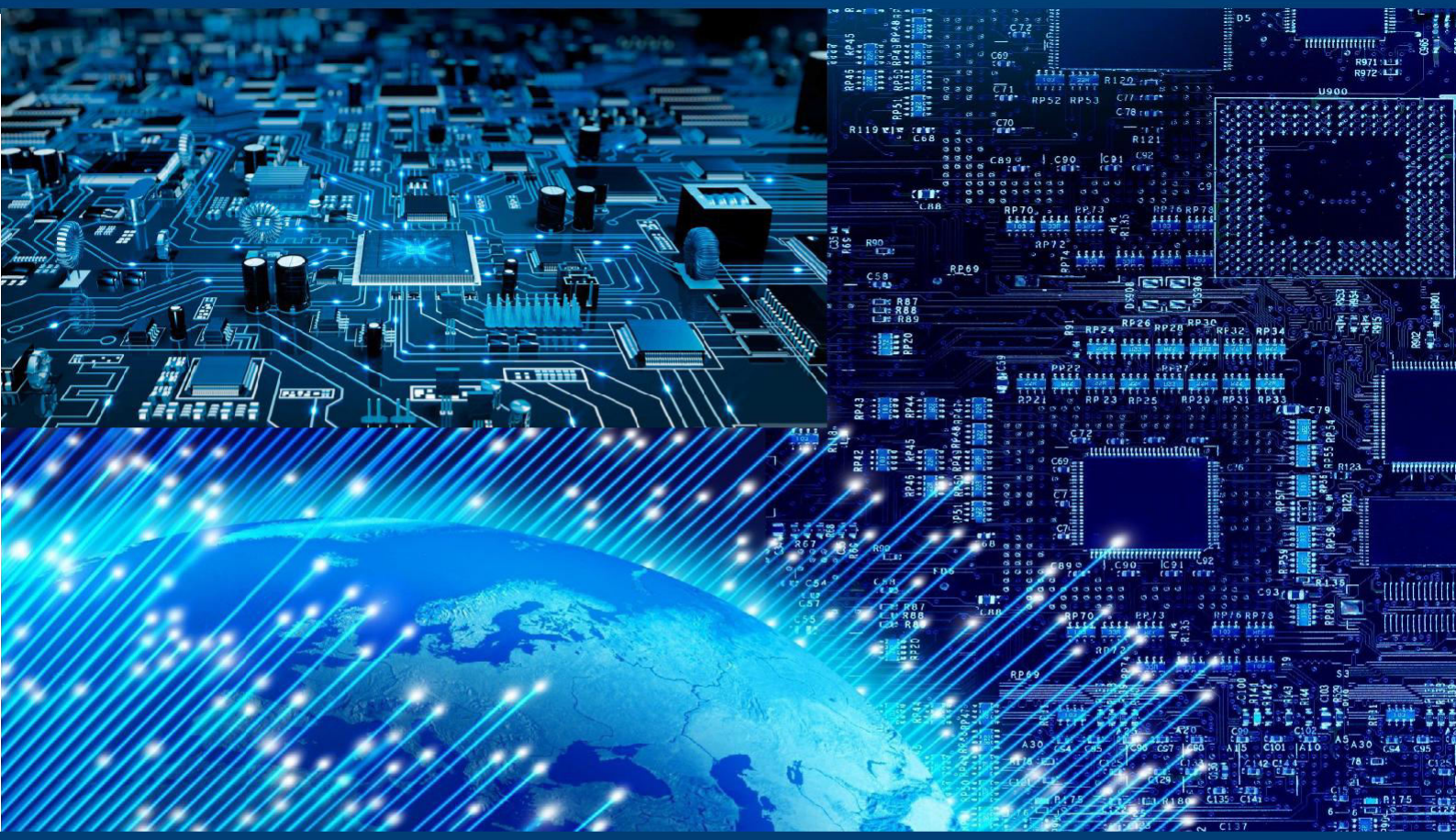

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |